संस्कृत शिक्षा में गिजुभाई बधेका की शिक्षा प्रविधियों का विनियोग

डॉ. अर्चना टी. अमीन
वैद्यश्री एम.एम. पटेल कोलेज ओफ एज्युकेशन
गुलबाई टेकरा, अहमदाबाद

सारांश

हम सब जानते है कि राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन तालीम परिषद दिल्ही के द्वारा अभ्यासक्रम के पुनः गढन के अनुसार संस्कृत शिक्षा को ज्यादा महत्त्व दिया गया है । उसके अन्वय में संस्कृत शिक्षा को कक्षा ६ से शाला में कार्यान्वित किया गया है । इस विषय को प्राथमिक कक्षा में बच्चों के सामने जब पहली बार पढाए जाते है तब शिक्षक के मनमें अनेक प्रश्न उठते है । जैसे कि बच्चों को नया विषय किस तरह पठाने चाहिए ? विषय को सरल तरीके से पढाने के लिए क्या करना चाहिए? विषय की रसमय प्रस्तुति किस तरह करनी चाहिए? इन सभी प्रश्नो के उत्तर प्राथमिक शाला में शिक्षक ढूंढता रहता है, लेकिन इन सभी का उत्तर हमारे अग्रणी बाल शिक्षाविद गिजुभाई बधेका के शिक्षा प्रविधियों में समाविष्ट है, संशोधक संस्कृत विषय से जुडे हुए है । इसलिए इन सभी प्रश्नो के उत्तर के लिए प्रस्तुत विषय को संशोधन के लिए पसंद किया गया हैं ।

प्रस्तुत संशोधन में प्राथमिक कक्षा में संस्कृत शिक्षक को नये विषय को पढते हुए जो मुसीबत होती है उसका विवरण, तद् पश्चात गिजुभाई बधेका को संक्षिप्त परिचय ओर उनका शिक्षा दर्शन का विवरण किया गया है । गिजुभाई के अनेक प्रविधियों में से कक्षा ६ और ७ में, वार्ताशिक्षण, क्रियाशिक्षण और गीत अभिनय शिक्षण को इस्तमाल किस तरीके के संस्कृत शिक्षा में किया जाता है । उसका विवरण किया गया है, प्रत्येक प्रविधियों को विवरण करते समय संशोधकने प्रविधि का महत्त्व और संस्कृत में विनियोग करने से बच्चों को किस तरह से प्रविधि उपयोगी होगी इसका आलेखन भी किया गया है । अंत में गांधीजी ने गिजुभाई के बारे में लिखा है "उनके उत्साह तथा लगन ने मुझे मुग्ध कर दिया है । उनका कार्य निश्चित रुप से बढेगा" तो हम सभी गिजुभाई की शिक्षा प्रविधियों का संस्कृत में विनियोग करके संस्कृत शिक्षा के प्रति बच्चों को अभिमुख करे ।

हम सब जानते है कि राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन तालीम परिषद दिल्ही के द्वारा अभ्यासक्रम के पुनः गढन के अनुसार संस्कृत शिक्षा करो ज्यादा महत्त्व दिया गया है । उसके संदर्भ में संस्कृत शिक्षा को कक्षा ६ से शाला में कार्यान्वित किया गया है । इस विषय को प्राथमिक कक्षा में बच्चों के सामने जब पहली बार पढाए जाते है तब शिक्षक के मनमें अनेक प्रश्न उठते है । जैसे कि बच्चों को नया विषय किस तरह पठाने चाहिए ? विषय को सरल तरीके से पढाने के लिए क्या करना चाहिए? विषय की रसमय प्रस्तुति किस तरह करनी चाहिए? इन सभी प्रश्नो के उत्तर प्राथमिक शाला में शिक्षक ढूंढता रहता है, लेकिन इन सभी का उत्तर हमारे अग्रणी बाल शिक्षाविद गिजुभाई बधेका के शिक्षा प्रविधियों में समाविष्ट है, संशोधक संस्कृत विषय से जुडे हुए है । इसलिए इन सभी प्रश्नो के उत्तर के लिए प्रस्तुत विषय को संशोधन के लिए पसंद किया गया हैं । गीजुभाईने प्रवर्तमान शिक्षणपध्धतिओं से मुक्त होकर बालशिक्षण के प्रयोग को कार्यान्वित किया है और शिक्षा जगत में अनोखी शिक्षण पध्धति को विकसित किया है ।

१. गिजुभाई का परिचय और शिक्षादर्शन

गिजुभाई बधेका का पूरा नाम गिजुभाई गिरजाशंकर भगवानजी बधेका था जो गिजुभाई के नाम से विख्यात हुए । भारत में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नए सिध्धान्त तथा विधियाँ निर्माण करनेवाले वे प्रथम शिक्षाविद थे । उनका जन्म १५ नवम्बर १८८५ को गुजरात में हुआ । कुछ वर्षो तक गिजुभाईने वकालत की, तत्पश्चात् सारा जीवन सन् १९९६ से मृत्यु तक अर्थात् वर्ष १९३९ तक शिक्षा क्षेत्र में व्यतीत किया । गिजुभाईने रुसो पेस्टोलॉजी, फ्रोबेल टालस्टॉयस मोन्चेसरी, नाल, स्वामी विवेकानन्द

तथा गाँधीजी समेत देश-विदेश के ख्याति प्राप्त शिक्षाविदो के शिक्षा सिद्धान्तो का अध्ययन किया । स्थानीय वातावरण तथा वर्तमान आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में न केवल देखा, परखा, अपितु मनोविज्ञान के सूत्रों के आधार पर उनकी मीमांसा भी की । उनसे प्रेरणा भी ली, परन्तु उस प्रकाश को तथा प्रेरणा को उन्होंने खुद की मौलिकता, खुद के निर्भीकता एवम् खुद के आत्मविश्वास से एक नया रुप दिया ।

२. गिजुभाई का शिक्षादर्शन

गिजुभाई के शिक्षादर्शन को एक पवित्र शब्द 'स्वर्ग' में व्यक्त किया जाता है । स्वर्ग का अर्थ है - आनन्दमय जीवन । गिजुभाईने अपने भावों को इस प्रकार व्यक्त किया है –

- *स्वर्ग बालक के सुख में है ।*
- *स्वर्ग बालक के स्वास्थ्य में है ।*
- *स्वर्ग बालक के आनन्द में है ।*
- *स्वर्ग बालक के खेलप्रिय भोलेपन में हैं ।*
- *स्वर्ग बालक के गाने तथा गुनगुनाने में है ।*

इन सभी के लिए उन्होंने गीत, नाटक, कहानी शिक्षण, क्रियाशिक्षण, स्वच्छता, वाचन शिक्षण का वर्गखंड में विनियोग करके बच्चों को खेल खेल में ही बोज के बिना शिक्षण देने की प्रविधियों का अमलीकरण किया ।

३. प्राथमिक कक्षा में संस्कृत शिक्षा का स्वरुप

प्राथमिक कक्षा में संस्कृत शिक्षा स्वरुप को विभाजित किया जाय तो तीन प्रकार है ।

४. संस्कृत शिक्षा का स्वरुप

गद्य	पद्य	व्याकरण
आकाश:पतति	हस्ती हस्ती	लेखनम्
सप्तवासरा:	दक्षिण पादम्	संख्या
काकस्यचातुर्यम्	प्रहेलिका	समय:
करोमि	भवतुभारतम्	करोतु
ममविद्यालय	सुभाषितानि	ममआज्ञानि
जन्मदिनोत्सव:	वन्दना	भाषाक्रीडा
विश्वासो नैव कर्तव्यम	मेघोवर्षति	
वार्तालाप	आम्लद्राक्षाफलम	
योजक: तत्रदुर्भल	धरागुर्जरी	

कक्षा ६ और ७ में इकाई को इस प्रकार विभाजित किया गया है ।

गिजुभाई के शिक्षण प्रविधियों का संस्कृत शिक्षण में विनियोग ।

प्राथमिक कक्षा में संस्कृत शिक्षा को जिस तरह विभाजित किया गया है इससे मालूम होता है कि गिजुभाई ने शिक्षा में विभिन्न प्रविधियों को अमलीकरण किया है । प्राथमिक कक्षा का शिक्षक इसका उपयोग गद्य शिक्षण के लिए कहानी शिक्षण,पद्य शिक्षण के लिए गीत और अभिनय का अमलीकरण और व्याकरण के लिए क्रिया द्वारा शिक्षण का विनियोग कर सकते है।

५. गद्य शिक्षण और कहानी शिक्षण

गिजुभाई बालकेन्द्री शिक्षा के हिमायती थे । वे मानते थे कि शिक्षा देने के लिए बच्चों को अच्छी तरह समझना चाहिए । उन्हें क्या पसंद है और क्या नहीं पसंद है इसका शिक्षक को ख्याल रखना चाहिए । प्राथमिक कक्षा के बच्चों को कहानी सुनना अच्छा लगता है । इससे बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि पेदा कर सकते है । उन्होंने दीवास्वप्न पुस्तक में इस प्रकार का नूतन

प्रयोग किया है । बच्चों को नई नई कहानी सुनाकर बच्चों में एकाग्रता, भाषाशुद्धि, साहित्य का परिचय और विशेष वाचन के प्रति रस पेदा किया है ।

६. संस्कृत में गद्य शिक्षा के लिए शिक्षक क्या कर सकता है ?

प्राथमिक कक्षा में आकाश: पतति, काकस्य चार्तुयम्, विश्वासो नैव कर्तव्यम, योजक: तत्र दुर्लभ: जैसी पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानी को समाविष्ट किया गया है । संस्कृत में बच्चों को सिर्फ पठन और रटन करवाना नहि चाहिए । इसके लिए बच्चों को, पहले मातृभाषा से परिचित कराना चाहिए । इसमे कहानी कहनी चाहिए । इसके बाद बच्चों को इस कहानी का पुनरावर्तन करवाना चाहिए । बच्चा जब मातृभाषा में कहानी बोल रहा हो तब शिक्षक को उसके साथ संस्कृत में वाक्य को बोलना चाहिए । तत्पश्चात् बच्चों को संस्कृत बोलने के लिए कहना चाहिए । इसके कारण उनको नये विषय का डर और बोज नहीं लगेगा । गिजुभाई कक्षा में नये नये बालगीत, लोकगीत और कविता का गान करते थे और बच्चों को ये सब गाना सिखाते थे । इस तरीके से बच्चो को भाषा शिक्षक के प्रति अभिमुख करते थे । बच्चे कब नई कविता सीख जाते उसका उनको पता भी नहीं चलता । और बच्चे फुरसद के समय में नये नये गीत गुनगुनाते रहते थे ।

७. संस्कृत में पद्य शिक्षा के लिए शशिक्षक क्या कर सकता है ?

प्राथमिक कक्षा में हस्ती हस्ती, चटक ! चटक, आम्लं दाक्षाफलम् जैसे पद्य में शिक्षक अभिनय के साथ वर्ग में प्रस्तुति करता है, तो बच्चों को बडा आनन्द आता है और शुण्डा, शूर्पकारो, स्तम्भसमाना:, बृहत्, बुभुक्षा, वामत:, श्रान्त:, स्वेद:, खिन:, चटक, कृषिक: वपति, वृषभ: जैसे शब्द अपने आप ही सीख जाते हैं और बच्चों को मातृभाषा के अर्थ का ख्याल आता है । नये संस्कृत गीत गाने लगते है तो प्रसन्न हो जाते है और गुनगुनाने लगते है । फिर अनुवाद करवाने की और रटन कराने की जरुरत ही नहीं होती । इस तरह प्रार्थना सभा में भवतु भारतम् धरागुर्जरी, सुभाषितानी जैसे इकाई प्रस्तुत करवाने से बच्चों में संस्कृत सीखने के प्रति रस पैदा कर सकते है ।

८. व्याकरण शिक्षण और क्रिया शिक्षण

संस्कृत में प्राथमिक कक्षा में व्याकरण शिक्षा का परिचय करवाना कठिन है और बच्चों में निराशा आ जाती है । इसके कारण संस्कृत करी शिक्षा बहुत कठिन लगने लगती है । गिजुभाई मानते थे की बच्चों को खेलना अच्छा लगता है । प्रवृत्ति भी अच्छी लगती है । तो शिक्षक को कठिन विषय को इस तरह वर्ग में सीखाना चाहिए की बच्चे खेल खेल में ही सीख जाते है । जब क्रिया शिक्षण का विनियोग करते है तो इन्द्रिय शिक्षा अपने आप ही आ जाती है । दीवास्वप्न पुस्तक में व्याकरण शिक्षण खेल-खेल में सिखाया गया था । इस पर विस्तृत पकाश डाला है ।

९. संस्कृत में व्याकरण शिक्षा के लिए शिक्षक क्या कर सकता है ?

प्राथमिक कक्षा में समाविष्ट संख्या, समय, मम, अङ्गानि, भाषाक्रीडा जैसे इकाई प्रवृत्ति का खजाना है । इसको सीखाने के लिए कक्षा में बच्चों के अलग अलग तीन समूह बनवाने होंगे । और सभी बच्चों को घटिका यंत्र बनाना होगा । एक समूह घटिका में समय बतायेगा । दूसरा समूह श्यामफलक में संस्कृत में समय लिखेगा और तीसरा समूह संस्कृत में समय कहेगा, इस तरह संख्या सीखाने के लिए चार्ट और क्लेश कार्ड का विनियोग करके कक्षा में समूह प्रवृत्ति कर सकते है । भाषाक्रीडा इकाई को पठाने के लिए शिक्षक चार्ट प्रस्तुत करके संस्कृत प्रश्नोत्तरी करेंगे रमण कस्य भ्राता ? दया: कस्यां पत्नी? बच्चे खेल खेल मै ही संस्कृत में मातुलेया, भागिनया, पितृस्वसा, जैसे शब्द को सरल तरीके से सीख जायेंगे और दिनचर्या में उपयोग भी करेंगे । इसलिए यह प्रविधि भी संस्कृत शिक्षा के लिए उपकारक हो सकती है ।

१०. उपसंहार

इस तरह कहानी शिक्षण, गीत-अभिनय शिक्षण, और क्रिया शिक्षण का विनियोग करने से प्राथमिक कक्षा में संस्कृत का वातावरण खड़ा हो सकता है लेकिन इसके लिए संस्कृत का वातावरण खडा हो सकता है लेकिन इसके लिए संस्कृत शिक्षक को जागृत होने की आवश्यकता है । और अपने विषय में ज्यादा रस लेना होगा और धीरज के साथ नये नये प्रयोग को

कार्यान्वित करना होगा गिजुभाई की प्रविधियों को कक्षा तक ले जाना होगा । तब ही गांधीजी का यह विधान यथार्थ होगा उन्होंने गिजुभाई के बारे में लिखा है । "उनके उत्साह तथा लगन ने मुझे मुग्ध कर दिया है । उनका कार्य निश्चय रुप से बढेगा।" तो आओ हम सब मिलकर गिजुभाई की शिक्षा प्रविधियों को संस्कृत में विनियोग करके हमारी प्राचीन भाषा के प्रति देश के बच्चों को अभिमुख करे ।

संदर्भ पुस्तक

१. *बधेका , गिजुभाई-दिवास्वप्न, आदर्श साहिसदन, अमदावाद ।*
२. *संस्कृत धोरण-६, ७ गुजरात राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल ।*
३. *जैन, अंजली-शक्षा के सिद्धान्त - के.एस. के. पब्लिशर्स – जयपुर ।*